

पद १६५

(रागः पिलु - तालः दीपचंदी)

हम समझे तुम समझो रे भाई । समज छांड बिन समझत
नाही ॥ध्रु. ॥ जो नाहीं समजे सो वाकोहि समझे । समझ बखाना
सो मुख साई ॥१॥ समझ फाड आतमकूसमझे । ताकी लो महिमा
बरनी न जाई ॥२॥ दीपप्रभा दीपक नाही समझे । बिन प्रकाश
दीप न जगमाई ॥३॥ हंस गुरु मुखब्रह्मही समझा । और श्रुति बैन
करत बढाई ॥४॥ ज्ञानरूप मार्ताण्ड प्रभुबिन । ना कोई समझे और
समझाई ॥५॥